CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 07 (2019-20)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (12)**
   वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं औद्योगिक प्रगति के पूर्व के मनोरंजन एवं आज के युग में उपलब्ध मनोरंजन में तथा इससे संबंधित हमारी आवश्यकताओं एवं अभिरुचि में बहुत अधिक अंतर आ गया है। पहले मनोरंजन का उद्देश्य मात्र मनोरंजन होता था और यह प्रक्रिया धार्मिक एवं सामाजिक भावों से संलग्न थी। ऐसा मनोरंजन व्यक्तित्व के गठन एवं स्वस्थ दृष्टिकोण के उन्नयन में सहायक होता था, किंतु आज इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य 'अर्थ-प्राप्ति' हो गया है। संभवतः इसी कारण मनोरंजन का स्वरूप पूर्णतः बदल गया है।
   आधुनिक परिवेश में मनोरंजन का जो भी रूप उपलब्ध है, वह हमारे व्यक्तित्व के गठन पर कुठाराघात करता है, आदर्शों को झुठलाता है। अस्वस्थ अभिरुचि एवं दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देता है या उस जीवन के सब्जबाग दिखाता है, जो जीने योग्य नहीं है। यह रूप व्यक्ति, समाज और विशेषकर हमारी भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है। मनोरंजन से संबद्ध विभिन्न क्रियाकलाप; जैसे-अभद्र सिनेमा, नृत्यशालाएँ, फैशन परेड आदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति एवं समाज के जीवन को विकृत कर रहे हैं। बड़े-बड़े नगरों की नृत्यशालाओं एवं नाइट क्लबों में मनोरंजन के नाम पर जो गतिविधियाँ संपन्न होती हैं, वे तथाकथित आधुनिक एवं प्रगतिशील विचारधारा से भले ही समर्थित हों, किंतु स्वस्थ भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार, तो वे पश्चिमी देशों की अंधी नकल ही हैं।
   इनके समर्थक यह भूल जाते हैं कि उनका मानसिक गठन, संस्कार, रीति-रिवाज़ तथा जीवन-पद्धति पश्चिमी देशों से

एकदम भिन्न है। इस प्रकार देश में मनोरंजन के नाम पर जो भी भौंडापन उपलब्ध है-वह विघटन का स्रोत है, विकारों का जनक है एवं क्षयग्रस्त जीवन का पर्याय है।

i. वैज्ञानिक प्रगति से पूर्व और बाद के मनोरंजन के स्वरूप और हमारी सोच में मूल अंतर क्या है? (2)
ii. वैज्ञानिक युग से पहले और बाद के मनोरंजन के रूप परिवर्तन का क्या कारण है? (2)
iii. आधुनिक मनोरंजन जीवन को कैसे प्रभावित कर रहा। (2)
iv. कैसे कहा जा सकता है कि मनोरंजन का एक विशेष स्वरूप भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है? (2)
v. पश्चिमी देशों का अंधानुकरण किसे कहा है और क्यों? (2)
vi. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)
vii. 'औद्योगिक' में मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए। (1)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1×4)**

नए युग मे विचारो की नई गंगा बहाओ तुम,
कि सब कुछ जो बदल दे, ऐसे तूफाँ मे नहाओ तुम।
अगर तुम ठान लो तो आँधियों को मोड़ सकते हो
अगर तुम ठान लो तो तारे गगन के तोड़ सकते हो,
अगर तुम ठान लो तो विश्व के इतिहास में अपने-
सुयश का एक नव अध्याय भी तुम जोड़ सकते हो,
तुम्हारे बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है-
उसी विश्वास को फिर आज जन-जन मे जगाओ तुम।
पसीना तुम अगर इस भूमि में अपना मिला दोगे,
करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन दिला दोगे।
तुम्हारी देह के श्रम-सीकरों में शक्ति है इतनी-
कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे।
नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है।
इशारा कर वही इस देश को फिर लहलहाओ तुम।

i. यदि भारतीय नवयुवक दृढ़ निश्चय कर ले, तो क्या-क्या कर सकते हैं?
ii. नवयुवको से क्या-क्या करने का आग्रह किया जा रहा है?
iii. आशय स्पष्ट कीजिए- "कही भी धूल मे तुम फूल सोने के खिला दोगे।"
iv. काव्याश में से कोई एक मुहावरा चुनकर उसका वाक्य प्रयोग कीजिए।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. किसी पर्यटन स्थल के होटल के प्रबंधक को निर्धारित तिथियों पर होटल के दो कमरे आरक्षित करने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए। पत्र में उन्हें कारण भी बताइए कि आपने वही होटल क्यों चुना।

OR

निकट के शहर से आपके गाँव तक की सड़क का रख-रखाव संतोषजनक नहीं है। मुख्य अभियंता, लोक-निर्माण विभाग को एक पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही का अनुरोध कीजिए। समस्या के निदान के लिए एक सुझाव भी दीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:
   a. समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए।
   b. फोन-इन का आशय समझाइए।
   c. समाचार के इंट्रो और बॉडी से आप क्या समझते हैं?
   d. वॉचडॉग पत्रकारिता का आशय बताइए।
   e. संपादक के दो दायित्वों का उल्लेख कीजिए।

6. अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

क्रिकेट का बादशाह:सचिन विषय पर एक फीचर लिखिए।

OR

रेडियो के लिए समाचार लेखन में किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

i. बच्चे किसका इंतजार कर रहे होंगे तथा क्यों?
ii. चिड़ियों के घोंसलों में किस दृश्य की कल्पना की गई है?
iii. चिड़ियों के परों में चंचलता आने का क्या कारण है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

धूत कहो अवधूत कहों, रजपूतु कहीं, जोलहा कहों कोऊ।
कहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सौऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु हैं राम को, जाको रुच सो कहें कछु ओऊ।
माँग के खैबो, मसीत को सोइबो, लेबोको एकु न दैबको दोऊ।।

i. कवि किन पर व्यंग्य करता है और क्यों?
ii. कवि अपने किस रूप पर गर्व करता है?
iii. कवि समाज से क्या चाहता हैं?

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x2=4)**

खरगोश की आँखों जैसा लाल सबेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साईकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से।

i. काव्यांश में आए बिंबों का उल्लेख कीजिए।
ii. प्रकृति में आए परिवर्तनों की अभिव्यक्ति कैसे हुई है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

i. काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ii. मनोभावों की तुलना किससे की गई है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कवि कुंवर नारायण के कथ्य को महत्व दिया है अथवा भाषा को- **बात सीधी थी पर** कविता के आधार पर तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए।

b. कविता के किन उपमानों को देखकर कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है?

c. किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं - इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

10. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)**

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ। अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, क़स्बा, गाँव पर पानीवाले फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषिमुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हे चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भईया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

i. बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करते हैं?
ii. त्याग की महत्ता को किसने बताया था? समाज के लिए यह क्यों ज़रूरी है?
iii. "यथा प्रजा तथा राजा' से जीजी क्या कहना चाहती थीं?

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू अपने आप में सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गाँधीजी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतने कोमल और इतने कठोर हो सकते थे। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?

i. शिरीष का वृक्ष लेखक पर क्या प्रभाव डालता है?

ii. लेखक शिरीष की किस विशेषता की चर्चा करता है?
iii. शिरीष स्थिर कैसे रह सका?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

b. **नमक** कहानी में क्या संदेश छिपा हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

c. महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

d. चैप्लिन के जीवन में कौन-से मूल्य अंत तक रहे?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. **सिल्वर वैडिंग** कहानी के पात्र किशनदा के उन जीवन-मूल्यों की चर्चा कीजिए जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे।

b. अपने घर में अपनी **सिल्वर वैडिंग** के आयोजन में भी यशोधर बाबू को अनेक बातें 'समहाउ इंप्रापर' लग रही थीं। ऐसा क्यों?

c. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक आनंद यादव की धारणा में क्या बदलाव आया?

d. सिंधु-सभ्यता के सबसे बड़े शहर मुअनजो-दड़ो की किन्हीं तीन उल्लेखनीय विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

e. अजायबघर में रखे सिंधु-सभ्यता के पुरातत्व के अवशेषों से किसका महत्व सिद्ध होता है? -कला का या ताकत का?

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 07 (2019-20)

Solution
Section A

1. i. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक प्रगति से पूर्व मनोरंजन व्यक्ति के व्यक्तित्व के गठन एवं स्वस्थ दृष्टिकोण के उन्नयन में सहायक होता था। उस समय मनोरंजन का संबंध धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों से होता था, परंतु वर्तमान समय में मनोरंजन का स्वरूप बहुत परिवर्तित हो चुका है। अब लोग फ़ैशन परेड, अभद्र सिनेमा तथा नृत्यशालाओं में अर्धनग्न नृत्य एवं भद्दे दृश्य देखकर मन बहलाते हैं।
   ii. वैज्ञानिक युग से पूर्व मनोरंजन का उद्देश्य केवल मनोरंजन होता था, परंतु अब मनोरंजन का उद्देश्य अर्थ-प्राप्ति हो गया है। पाश्चात्य दृष्टिकोण से प्रभावित होने के कारण मनोरंजन प्रदान करने वाले लोगों का मुख्य उद्देश्य अर्थ-प्राप्ति हो गया है।
   iii. आधुनिक मनोरंजन से व्यक्तियों और सामाजिक जीवन में विकृति उत्पन्न हो रही है। पाश्चात्य नृत्य, आइटम डांस, अभद्र सिनेमा तथा टीवी के अधिकांश कार्यक्रम लोगों की मानसिकता एवं व्यवहार को विकृत कर रहे है।
   iv. आजकल बच्चे वीडियो गेम्स या कार्टून फ़िल्में देखकर मनोरंजन करते है। किशोर मोबाइल या कंप्यूटर पर वासना-प्रधान फ़िल्में देखते हैं। इस प्रकार का मनोरंजन भावी पीढ़ी को निश्चय ही भ्रमित कर रहा है और इससे आने वाली पीढ़ियाँ भी प्रभावित भी हो रही हैं।
   v. फैशन परेड, अश्लील नृत्यशैली और अभद्र फिल्मों को पश्चिम का अंधानुकरण कहा गया है क्योंकि मनोरंजन के ये साधन पश्चिम की देन हैं।ये सारे मनोरंजन के साधन पश्चिम की पूरी तरह से नकल है।
   vi. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है- 'सामाजिक प्रदूषण और मनोरंजन'
   vii. औद्योगिक -मूल शब्द-उद्योग; प्रत्यय-इक
2. i. कविता के अनुसार यदि भारतीय नवयुवक दृढ़ निश्चय कर ले, तो वे हर असंभव कार्य को संभव बना सकते हैं।
   ii. कवि नवयुवकों से नवीन युग की परिस्थितियों के अनुरूप विचारों की नवीन गंगा बहाने का, जन-जन में विश्वास जागृत करने का, करोड़ो दीन-हीनों को नव जीवन प्रदान करने का तथा अपने श्रम से इस देश को पुनः सर्वश्रेष्ठ बनाने का उपक्रम करने का आग्रह कर रहा है।
   iii. उपरोक्त पंक्ति का आशय यह है कि परिश्रम से मिट्टी में सोने के फूल खिलाए जा सकते हैं एवं समृद्धि और खुशहाली की एक नई दास्ताँ लिखी जा सकती है।
   iv. **आसमान के तारे तोड़ना** -यदि व्यक्ति कोई कार्य करने के लिए तन-मन-धन एक कर दे, तो उसके लिए आसमान के तारे तोड़ना भी कठिन नही है।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. सेवा में,

प्रबंधक महोदय,

स्पार्क हेवन होटल,

नैनीताल, उत्तराखंड।

17 अप्रैल, 2019

विषय -होटल में कमरे आरक्षित करवाने हेतु।

महोदय,

मैं जय प्रकाश, दिल्ली का निवासी हूँ। मैंने आपके होटल की आवभगत के विषय में बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं और मेरा परिवार दिनांक 25 अप्रैल, 2019 से 27 अप्रैल, 2019 तक नैनीताल में पर्यटन के उद्देश्य से आ रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अप्रैल 20, 2019 से 27 अप्रैल 27 , 2019 तक की दिनांक के लिए मेरे नाम से दो कमरे आरक्षित कर दीजिए।

धन्यवाद

भवदीय

जय प्रकाश

दिल्ली

OR

सेवा में
मुख्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
दिल्ली।

15 अप्रैल, 2019

विषय - सड़कों के रख-रखाव हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं गोविन्द प्रसाद, बसई गाँव का निवासी हूँ। निकट के शहर से हमारे गाँव को जो सड़क जोड़ती है ,उसका अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोक निर्माण विभाग की ओर से निर्माण करवाया गया था। सड़क का उचित रख-रखाव न करने के कारण सड़क पर दोनों ओर गंदगी फैली रहती है, लोग अपने घर का कूड़ा वहाँ डालने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क भी बीच-बीच में कई जगह से टूट गई है,और सड़क पर जगह-जगह गढ्ढ़े बन गए हैं, जिससे आने-जाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि सड़क पर कूड़ा डालने वाले लोगों को चेतावनी देकर वहाँ पर कूड़ा न डालने का निर्देश दिया जाए और सड़क को पुनः निर्माण करके उसे उपयोग करने के लायक बनाया जाए।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र द्वारा प्राप्त सूचना पर शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय
गोविन्दप्रसाद
बसई गाँव

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचार का अंग्रेजी पर्याय (NEWS) चारो दिशाओं को सांकेतिक करता है। अपने आस-पास के समाज एवं देश-दुनिया की घटनाओं के विषय मे त्वरित एवं नवीन जानकारी, जो पक्षपात रहित एवं सत्य हो, समाचार कहलाता है।

   b. **फोन इन** कार्यक्रम रेडियो या टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले वे कार्यक्रम होते हैं, जिनमे किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या जागरूकतापरक कार्यक्रम में दर्शकों को फोन करके जानकारी ग्रहण करने या अपने विचार प्रस्तुत करने का अधिकार होता है।

   c. समाचार के आमुख को 'मुखड़ा' या 'इंट्रो' कहा जाता है। यह समाचार का पहला अनुच्छेद होता है। आमुख या इंट्रो के अतिरिक्त समाचार के शेष भाग को बॉडी या क्लेवर कहा जाता है।

d. कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी को सार्वजनिक करना 'वॉचडॉग पत्रकारिता' कहलाता है। यह सरकारी सूत्र पर आधारित पत्रकारिता है।

e. **संपादक के दो दायित्व निम्नलिखित हैं-**

   i. संवाददाताओं तथा रिपोर्टरों द्वारा प्राप्त लिखित सामग्री को शुद्ध कर प्रस्तुति के योग्य बनाना।
   ii. समाचार-पत्र की नीति, आचार-संहिता तथा जनकल्याण का ध्यान रखना।

6. **अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा**

वर्तमान समय में चारों तरफ अंग्रेजी माध्यम शिक्षा का बोलबाला है और अधिकतर मायनों में यह सही भी है। प्राथमिक शिक्षा विभाग स्कूलों में अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा शुरू करने की तैयारी में लग गया है। हालाँकि अभी इसके लिए शिक्षा विभाग सर्वेक्षण कर रहा है कि वर्तमान समय में कितने स्कूलों में अंग्रेज़ी माध्यम चल रहा है और उसकी क्या स्थिति है? क्या अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा का अधिक संख्या में बच्चे लाभ उठा रहे हैं या नहीं?
शिक्षा विभाग की योजना के अनुसार जल्द ही प्राथमिक स्कूलों मे अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा शुरू होगी और शुरुआत में अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा कुछ ही चुनिंदा स्कूलों में शुरू की जाएगी। यहाँ परिणाम अच्छे आने पर अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा को सभी स्कूलों में शुरू किया जाएगा। ऐसा नहीं है कि वर्तमान समय में किसी भी स्कूल में अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा नहीं चल रही है। अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा को स्कूलों में शुरू किए जाने की वजह, स्कूलों में बच्चों की कम होती संख्या है। आजकल अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पाना एक ट्रेंड बन गया है। आपने क्या सीखा? इससे कोई सरोकार नहीं है, आप अंग्रेजी माध्यम से पढ़ रहे हैं, ये बात मायने रखती है। अब प्राथमिक स्कूलों में बच्चों की संख्या बढ़ाने के लिए शिक्षा विभाग ने भी नई तैयारी शुरू की है और देखना यह है कि कब स्कूलों में अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा शुरू हो पाती है और बच्चों की संख्या बढ़ाने में यह कितनी कारगर सिद्ध होती है।

OR

क्रिकेट का बादशाह : सचिन

खेलों की दुनिया में कुछ ऐसी उपलब्धियाँ होती है, जिन तक पहुँचना आसान नहीं होता। अंतर्राष्ट्रीय एकदिवसीय क्रिकेट में कोई बल्लेबाज अब तक 200 रन नहीं बना पाया था, लेकिन भारत के सचिन तेंदुलकर ने दक्षिण अफ्रीका की मज़बूत टीम के खिलाफ यह कारनामा कर दिखाया।
इन्हीं पंक्तियों के साथ अमेरिका की प्रतिष्ठित पत्रिका 'टाइम' ने मास्टर ब्लास्टर सचिन की वर्ष 2010 में 24 फरवरी को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ग्वालियर वनडे में खेली गई नाबाद 200 रनों की विश्व रिकॉर्ड पारी को वर्ष 2010 के, दस सबसे यादगार क्षणों में शामिल किया था।
'टाइम' द्वारा कही गई बात बिलकुल सच है। सचिन क्रिकेट जगत में एक ऐसी जीती जागती मिसाल बन चुके हैं, जिसका कोई मुकाबला नहीं।यहीं कारण है ,कि उन्हें 'क्रिकेट का भगवान' कहा जाता है।
दाएँ हाथ के बल्लेबाज सचिन ने अपने अंतर्राष्ट्रीय करियर की शुरुआत 15 नवंबर, 1989 को की थी, जबकि एक दिवसीय

क्रिकेट करियर की शुरुआत 18 दिसंबर, 1989 को पाकिस्तान के विरुद्ध। उसके बाद इस महान खिलाड़ी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड बनाता चला गया।
टेस्ट क्रिकेट में 51 शतक एवं 68 अर्द्ध-शतकों के साथ 15,921 रन बनाने वाले वे दुनिया के प्रथम बल्लेबाज हैं। अंतर्राष्ट्रीय एक दिवसीय मैचों में उन्होंने 49 शतकों एवं 95 अर्द्ध-शतकों के साथ 18,000 से अधिक रन बनाए हैं और ऐसा करने वाले वे दुनिया के पहले एवं एकमात्र बल्लेबाज हैं। वास्तव में, रिकॉर्ड एवं सचिन एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। 'रन मशीन' 'लिटिल मास्टर', 'मास्टर ब्लास्टर' आदि जैसे उपनाम सचिन के कद के आगे बौने नज़र आते हैं। इतना ही नहीं, खेल के क्षेत्र में भारत रत्न का सम्मान पाने वाले वे पहले खिलाड़ी हैं। 'भारत रत्न' से सम्मानित सचिन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। 'क्रिकेट के बादशाह' सचिन निश्चय ही भारत के गौरव हैं।

OR

रेडियो एक श्रव्य माध्यम है जिसकी पहुँच दूर-दराज में रहने वाले आम जन तक है। मुद्रित माध्यम जहाँ केवल साक्षर वर्ग के लिए उपयोगी होता है वहीं रेडियो इस सीमा को तोड़ता हुआ साक्षर व निरक्षर दोनों वर्गों के लिए उपयोगी होता है। रेडियो के लिए लेखन करते समय श्रोता वर्ग को ध्यान में रखते हुए सहज, सरल और प्रवाहमान भाषा का प्रयोग करना चाहिए। समाचारवाचक को कोई परेशानी न हो इसके लिए समाचार की साफ-सुथरी टाइप्ड कॉपी तैयार करनी चाहिए। बड़ी संख्याओं को शब्दों में लिखा जाना चाहिए। अत्यावश्यक आँकड़ों का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

Section C

7. i. बच्चे अपने माता-पिता के आने का इंतजार बेसब्री से कर रहे होंगे क्योंकि चिड़ियाँ (माँ) के पहुँचने पर ही उनकी उदर पूर्ति होगी।
   ii. कवि चिड़ियों के घोंसलों में उस दृश्य की कल्पना करता है जब बच्चे चोंच खोल कर माँ-बाप की प्रतीक्षा में अपने घरों से झाँकने लगते हैं।
   iii. चिड़ियों के परों में चंचलता इसलिए आ जाती है क्योंकि दिन तेजी से ढलता जा रहा है और उन्हें घोंसलों में प्रतीक्षा करते अपने बच्चों की चिंता है। वे शीघ्रता से पहुँच कर अपने बच्चों को भोजन, स्नेह व सुरक्षा देना चाहती हैं।

OR

   i. कवि धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर राजनीति करने वाले ठेकेदारों पर व्यंग्य करता है क्योंकि समाज के इन ठेकेदारों के व्यवहार से ऊँच-नीच, जाति-पाँति आदि के द्वारा समाज की सामाजिक समरसता कहीं खो गई है।
   ii. कवि स्वयं को रामभक्त कहने में गर्व का अनुभव करता है। वह स्वयं को उनका गुलाम कहता है तथा समाज की हँसी का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
   iii. कवि समाज से कहता है कि समाज के लोग उसके बारे में जो कुछ कहना चाहें, कह सकते हैं। कवि पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह किसी से कोई संबंध नहीं रखता।
8. i. उपर्युक्त पदयांश के आधार पर कवि ने दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया है जैसे -
   - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
   - शरद ऋतु के प्रारंभ का बच्चे के रूप में चित्रण करते हुये उसका अपनी नई साइकिल तेजी से चलाते और

घंटी बजाते हुए आना।

ii.
- वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद ऋतु के खुशनुमा आगमन पर प्रकृति में परिवर्तन होते हैं जैसे मौसम साफ होने के कारण बच्चों के खेलकूद कर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करते हैं।
- चारों ओर मनभावनी चमकीली कोमल धूप बिखरी रहती है।

OR

i. प्रस्तुत काव्यांश में खेती के कार्यों के रूपकों के जरिए कवि ने अपने रचना-कर्म को व्याख्यायित किया है। जिस प्रकार खेत में बीज बोया जाता है, वैसे ही कवि मनोभावों और विचारों के बीज बोता है। इस बीजारोपण से शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और साहित्यिक कृति रूपी फसल विकसित होती है। इसके माध्यम से कवि ने साहित्य की जीवंतता और अनंतकाल तक उसके अस्तित्व में बने रहने की बात कही है।

ii. मनोभावों की तुलना 'अंधड़' से की गई है क्योंकि भावना एवं विचार आँधी की तरह मन में आते हैं तभी तीव्र मनोभावों की उत्पत्ति द्वारा काव्य-सृजन होता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. बात सीधी-सी थी कविता में कवि ने कथ्य को महत्व दिया है। इसका कारण यह है कि सीधी और सरल बात को कहने के लिए जब कवि ने चमत्कारिक भाषा में अपनी बात कहनी चाही तो भाषा के चक्कर में भावों की सुंदरता नष्ट हो गई। भाषा के उलटफेर में पड़ने के कारण उसका कथ्य भी जटिल होता गया और अपना महत्त्व खो दिया। बात का भाषा में बेकार घूमना इस बात की ओर संकेत करता है कि मुख्य कथ्य भाषा में उलझ कर खो जाता है इसलिए इससे बचना चाहिये।

b. 'उषा' कविता में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने ग्रामीण उपमानों का प्रयोग कर गाँव की सुबह को गतिशील शब्द चित्र के माध्यम से सामने लाने का प्रयास किया है। कविता में नीले रंग के प्रातःकालीन आकाश को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहा है। ग्रामीण परिवेश में ही गृहिणी भोजन बनाने के बाद चौके (चूल्हे) को राख से लीपती है, जो प्रायः काफ़ी समय तक गीला ही रहता है।
दूसरा बिंब काली सिल का है। काली सिल अर्थात् पत्थर के काले टुकड़े पर केसर पीसने का काम भी गाँव की महिलाएँ ही करती हैं। तीसरा बिंब, काले स्लेट पर लाल खड़िया चाक मलने की क्रिया नन्हे ग्रामीण बालकों द्वारा होती है। इस बिंबात्मक चेतना में गतिशील शब्द चित्र भी मौजूद है। यहाँ सवेरे अपने-अपने कार्यों में लगे ग्रामीण वर्ग तथा जनजीवन की गतिशीलता को स्पष्ट करने वाले प्रतिमान हैं। यहाँ स्थिरता का नामोनिशान नहीं है। गतिशीलता इस अर्थ में भी है कि तीनों शब्द चित्र स्थिर न होकर किसी-न-किसी क्रिया के अभी-अभी समाप्त होने के सूचक हैं। अतः कह सकते हैं कि शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।

c. कवि को निराशा के क्षणों में ऐसा लगता है कि किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। कवि कहता है किअसफल होने पर मैं किस्मत पर रोता हूँ और किस्मत मुझे उदास देखकर रोती है कि वह मेरे लिए कुछ सार्थक नहीं कर पाई। इस प्रकार मैं और किस्मत दोनों एक जैसे हैं। दोनों एक दूसरे की असफलता,अभावों और विवशता पर रोते हैं।

10. i. किसान जमीन की निराई, गुड़ाई करके मिट्टी तोड़कर हल चलाकर खेत तैयार करता है और फिर बीज-खाद डालकर , सिंचाई करता है तब जाकर फसल तैयार होती है।

ii. ऋषि मुनियों ने बताया है पहले स्वयं देना होगा तभी देवता उसे कई गुना करके लौटाएँगे।

iii. इस कथन का अर्थ है कि प्रजा में इतनी शक्ति होती है कि वह अपने अनुसार राजा को चलने के लिए बाध्य कर सकती है।

OR

i. एक अवधूत के समान शिरीष का वृक्ष लेखक के मन में इस प्रकार की तरंगें जगा देता है, जो हमेशा ही ऊपर की ओर उठती रहती हैं।

ii. शिरीष की विशेषता है कि वह चिलचिलाती धूप में भी सरस बना रहता है। वह बाहरी परिवर्तनों, धूप, वर्षा, आँधी, लू आदि को झेलकर भी स्थिर बना रहता है।

iii. शिरीष एक कालजयी अवधूत के समान है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर कोमल और कठोर बना रहता है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं। दुकानदार कभी-कभी ग्राहक की आवश्यकताओं का भरपूर शोषण करते हैं जैसे कभी कभी जीवनपयोगी वस्तुओं (चीनी, गैस, प्याज, टमाटर आदि) की कमी हो जाती है। उस समय दुकानदार मनचाहे दामों में इन चीजों की बिक्री करते हैं। ग्राहक भी अपनी दैनिक आवश्कताओं के कारण सबकुछ जानते हुए बाजार के शोषण का शिकार बन जाता है।

b. नमक कहानी में छिपा संदेश यह है कि मानचित्र पर एक लकीर मात्र खींच देने से वहाँ रहने वाले लोगों के दिल नहीं बँट जाते हैं। जमीन बँटने से लोगों के आवागमन पर प्रतिबंध और पाबंदियाँ लग जाती हैं परंतु लोगो का लगाव अपने जन्मस्थान से बना रहता है। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी द्वारा दिल्ली को तथा भारतीय कस्टम अधिकारी द्वारा ढाका को अपना वतन मानना इसका प्रमाण है।जमीन का बंटवारा हो सकता है दिल का नहीं।

c. **महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-**

i. **परिश्रमी-** परिश्रमी भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं अदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

ii. **स्वाभिमानिनी-** भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वार अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

iii. **महान सेविका-** भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिकाने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के

लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

d. चैप्लिन के जीवन में निम्नलिखित मूल्य अंत तक रहे-एक परित्यक्ता व दूसरे दर्जे की स्टेज अभिनेत्री का बेटा होना, भयावह गरीबी व माँ के पागलपन से संघर्ष करना, साम्राज्यवादी व पूँजीवादी समाज द्वारा दुत्कारा जाना।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. **सिल्वर वैडिंग कहानी के पात्र किशनदा के अनेक जीवन मूल्य ऐसे थे जो यशोधर बाबू की सोच में आजीवन बने रहे। उनमें से कुछ जीवन मूल्य निम्नलिखित हैं -**

1. **सादगी**- यशोधर बाबू अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। वे सुविधा के साधनों के फेर में नहीं पड़े। वे साइकिल पर ऑफिस जाते थे तथा फटा पुलोवर पहनकर दूध लाते थे।
2. **सरलता**- यशोधर बाबू सरलता की मूर्ति थे। वे छल-कपट या दूसरों को धोखा देने जैसे कुत्सित विचारों से दूर थे।
3. **भारतीय संस्कृति से लगाव**-यशोधर बाबू को भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव है। उनके बच्चों पर पाश्चात्य सभ्यता से लगाव है फिर भी वे पुरानी परंपरा और भारतीय संस्कृति के पक्षधर है। वे परम्परागत भारतीय रीति-रिवाज़ों में विश्वास रखते हैं तथा उन्हें पूरा भी करते हैं।
4. **आत्मीयता**- यशोधर बाबू अपने पारिवारिक सदस्यों के अलावा अन्य लोगों से भी आत्मीय संबंध रखते हैं और यह संबंध बनाए रखते हैं।
5. **पारिवारिक जीवन शैली**- यशोधर बाबू सहज पारिवारिक जीवन जीना चाहते हैं। वे निकट संबंधियों से रिश्ते बनाए रखना चाहते हैं तथा यह इच्छा रखते हैं कि सब उन्हें परिवार के मुखिया के रूप में जाने।

उपर्युक्त जीवन-मूल्य उन्हें किशनदा से मिले थे जो उन्होंने आजीवन बनाए रखा।

b. अपने घर में अपनी 'सिल्वर वैडिंग' के आयोजन में भी यशोधर बाबू को अनेक बातें 'समहाउ इंप्रापर' लग रही थीं। इसका कारण उनकी परंपरागत सोच थी तथा किशनदा के दिए हुए संस्कार थे। वे इन चीजों को पाश्चात्य संस्कृति की देन मानते हैं। वे पुराने संस्कारों में विश्वास रखते हैं। उन्होंने केक भी नहीं काटना चाहा क्योंकि वे इसे 'विलायती प्रथा' मानते थे। उनसे इस पार्टी के आयोजन के विषय में पूछा तक नहीं गया। साथ ही साथ इस बात की भी उन्हें कसक थी कि उनके जन्मदिन पर कभी लड्डू तक नहीं आया तथा उनका विवाह भी बहुत ही सादे तरीके से और वो भी कोऑपरेटिव से कर्ज लेकर हुआ था और उन्हीं के विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह इतनी धूमधाम से मनाई जा रही है। अतः वे पूरे कार्यक्रम में बेगाने से बने रहे।

c. कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक ढोर चराते समय, खेत में पानी लगाते हुए और अन्य काम करते समय अकेलापन महसूस करता जो उसे बहुत खटकता था। उसे लगता था कि उसके साथ कोई बात करने वाला हो। हंसी मजाक करते हुए, गपशप करते हुए काम करना अच्छा लगता था। उसे हमेशा ये लगता था कि काम करते हुए कोई न कोई साथ में हो लेकिन कविता के प्रति लगाव के बाद वह खेतों में पानी देते समय, भैंस चराते समय कविताओं में

खोया रहता था। धीरे-धीरे वह स्वयं तुकबंदी करने लगा। वह अकेले में ऊंची आवाज में कविता गाता, अभिनय व नृत्य करता था, कविता गाते-गाते वह सचमुच ही नाचते लगता था। इसलिए अब उसे अकेलापन अच्छा लगने लगा था।

d. **मुअनजो-दड़ो शहर की अनेक विशेषताएँ थीं, जो निम्नलिखित हैं-**

   i. यहाँ सैन्य बल नहीं था क्योंकि यहाँ किसी प्रकार के हथियार भी नहीं मिले।
   ii. यह सभ्यता एक समृद्ध सभ्यता थी परन्तु भव्यता का आडम्बर नहीं मिलता क्योंकि यहाँ कोई राजभवन दिखाई नहीं देता और न ही राजा की कोई मूर्ति या पिरामिड।
   iii. यहाँ मकानों में बड़े कमरों के साथ छोटे-छोटे कमरे भी बने थे।
   iv. यहाँ जल निकासी की भी उत्तम व्यवस्था थी।
   v. यहाँ लोग खेती करते थे।
   vi. यहाँ के लोग धार्मिक अनुष्ठान भी करते थे।

e. मुअनजो-दड़ो के अजायबघर में सिंधु-सभ्यता के पुरात्व के अवशेष रखे गए हैं। यहाँ पर काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्-भांड, चौपड़ की गोटियाँ, मिट्टी की बैलगाड़ी, पत्थर के औज़ार, मिट्टी के कंगन आदि रखे गए हैं। यहाँ प्राप्त वस्तुओं में पत्थर की मूर्तियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सुघड़ अक्षरों की लिपि आदि को देखकर यह पता चलता है कि यह सभ्यता कला सिद्ध सभ्यता थी। यहाँ औज़ार तो हैं, पर हथियार नहीं। समूची सिंधु-सभ्यता में हथियार उस तरह के नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। यहाँ पर प्रभुत्व या दिखावे के तेवर नदारद हैं। इससे यह पता चलता है कि इस सभ्यता में कला का महत्त्व अधिक था, न कि ताकत का।